मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 92,सितम्बर(प्रथम), 2020

संगति

ओदाजी

मनुष्य अपने जीवन में किसी किसी न किसी प्रकार से किसी का साथ या संगति ढुंढ्ता रहता है और उसके बिना अपने को अधुरा मानता है बचपन से लेकर के अंतिम साँस लेने तक वो संगतियों का स्नेह लेता रहता है कोई भी बच्चा पैदा होने के बाद, जीवन में विभिन्न संगति करता है सर्वप्रथम वह माता की संगति करता है माता के स्नेह और प्रेरणा से जीवन में संस्कार पाता है उसके पश्चात वह पिता की संगति करता है उनसे संस्कार पाता है और उसके बाद वह, अपने बचपन के साथियों के साथ खेलता है और उनकी बातो को समझाता और जानता है और उनसे प्रेरणा भी लेता है और कुछ दिनों के बाद, वह विद्यालय जाता है और वहां भी मित्रो का जमावड़ा होता है उनसे भी सिखाता है और उम्र आगे बढती है तो वह महाविधालय जाता है उच्च शिक्षा पाता है और उससे आगे आख की पुतली हिलना आरम्भ करती है और स्त्री और पुरुष की संगति प्रेमिका और प्रेमी के रूप में करता है तत्पश्चात विवाह होता है और पुनह वही कहानी आरम्भ हो जाती है जिससे उसकी संगति आरम्भ हुई थी कई वर्ष पूर्व में जब वो बच्चा था और अब वह पिता है वर्तमान में वह संगति का कारण होता है।

इस दौरान जो लोगों की निकटता पाता है उन लोगों के संस्कारों से इसके संस्कारों की लडाई होती है और जो प्रबल होता है वो दुसरे पर विजय प्राप्त कर लेता है क्या विजय गुणवान ही होता है ये आवश्यक नही है क्योकि जीवन में ये देखा जाता है की अवगुणी गुणवान को अवगुणी बना देता है और कई बार गुणी अवगुणी को गुणवान बना देता है। इस बात पर एक दोहा है की

ग्रह भेजष जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग॥॥ बालकाण्ड/रामा.

अर्थात ग्रह, औषधि, जल, वायु और वस्त्र ये सभी जैसी कुसंग और सुसंग पाते है वैसै ही हो जाते है जैसे ग्रह का प्रभाव होता है वह जब अपनी दशा बदलता है और दुसरे घर या भाव में जाता है तो उसी घर में उपस्थित ग्रह के अनुसार कार्य करता है या तो उसको दबा देता है या उसके अनुसार हो जाता है परन्तु अलग अलग होना नहीं होता है

औषधि के दो रूप होते हो एक होता है रोगी को मादक करके दर्द दूर करना और दूसरा, प्रयोग एक नशे के रोगी अपने नशे की पूर्ति करने के लिए करते है परन्तु औषधि एक होती है और उसको रोगी और नशेडी की संगति ज्यो ही मिलती है तो उसका रूप बदल जाता है एक और वह जीवन दायनी होती है तो दूसरी और वह प्राण घटकम होती है और सामाजिक समस्या उत्पन्न करती है

इसकी प्रकार से जल है शीतल और सुगंध से रहित, परन्तु ज्यों ही इसमे रस डाला जाता है या चीनी डाली जाती है ये अपना स्वाद ले लेता है और मीठा हो जाता है ये है संगति का प्रभाव ऐसे ही जल जब नाली में होता है तो बदबू मारता है यधपि जल सुगंध रहित होता है और जल को यदि दूध में मिला दो दूध का वजन बढ़ा देता है और दुकानदार अपने ग्राहक को अधिक दाम में बेच देता है। और ग्राहक उसको उसी रूप में ले लेता है तो जल भी अपना प्रभाव संगति के अनुसार बदल लेता है परन्तु दूध जब आंच में आता है तो जल दूध का साथ छोड़ देता है।

पवन का भी येही हाल है इसके उपर तो एक दोहा भी है

सबे सहायक सबल के कोऊ न निबल सहाय।

पवन जगावत आग को दीप ही देत बुझाय॥

अर्थात सभी मनुष्य ताकतवर और पहुँच वाले का साथ देते है जैसे पवन आग को जगाती और दीप को बुझा देती है अर्थात कही पर आग लगी हो और पवन चल रही हो तो आग बढ़ती जाती है और विशाल और विकराल रूप ले लेती है वही दूसरी मंदिर में या घर में रोशनी कर रहे एक छोटे से दीपक को बुझा देती है तो पवन भी संगति पाकर अपना रूप बदल लेती है और स्पष्ट करे तो एक चोपाई भी है

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥

जो धुल होती है वो पवन की संगति पाकर के आकाश में पहुँच जाती है अर्थात जब उसने पवन की संगति की तो उसको आकाश मिला और उसने जब वर्षा जल का स्पर्श किया तो वही धुल कीचड़ बन गयी और गंदंगी हो गयी तो ये होता है संगति का प्रभाव।

वस्त्र भी उसी भूमिका में है यह जब शरीर को ढकता है तो व्यक्ति की सुन्दरता की वृद्धि कर देता है परन्तु वही जब यह शरीर को अर्ध रूप में ढकता या उससे दूर होता है तो यह अशीलता का कारण हो जाता है इस पर प्राय: यह सुना जाता है की एक समय था जब वस्त्र हरण पर महाभारत हो गयी और अब ये समय है की वस्त्र पहनने के लिए कहने पर न्यायपालिका में विवाद पहुँच जाता है। अंत: में ये ही कहा जा सकता है की संगति का प्रभाव सर्वत्र जीव पर देखा जाता है मनुष्य तो है ही पशुऔ और पक्षियों पर भी इस का प्रभाव होता है जैसे की

साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं॥

अर्थात सज्जन और दुष्ट के घर के तोते होते तो है पक्षी परन्तु सज्जन के घर का तोता दिन और रात्रि **"राम राम"** की रट लगाता है वही दुष्ट के घर का तोता गिन गिन कर **"गाली ही गाली"** देता है। तो आत्म प्रेमियों के लिए तो विशेष कर के ये संदेश है की वो अपनी संगति का चुनाव सत भाव वाले व्यक्तियों को देख कर ही करे और वैर भाव किसी से भी न करे बस उन लोगों की संगति से बचे केवल इतना सा सन्देश है संगति का।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें